वैल्हम स्कूल पत्रिका

१९६९ हिन्दी विभाग नं० २७

अस्माके संत्वाशिषः,
सत्या नः संत्वाशिषः ॥

—यजुर्वेद

हम आशावादी बनें; हमारी आशाएँ सफल हों।

शतहस्त समाहर,
सहस्त्र हस्त संकिर ॥

—अथर्ववेद

हम सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करें और हजारों हाथों से बाटें।

———

गाँधी जी

गाँधी जी देश के लिए जीए,
देश के लिए लड़े,
एक देशवासी ने,
उन्हें गोली से भूना ॥

सारा जग उसका शिष्य बना,
बहुत महा - मनुष्य हुए,
उनके बहुत शिष्य भी मरे,
भूख या पीड़ा से ॥

कितनी बेहूदी बात,
मजहबी रस्मों के साथ,
गाँधी जी की मौत,
हुई कुछ बेवकूफों के हाथ ॥

सुशील गधवानी,
सी०ई० (डी०)

———

गंगाजल का महत्त्व

ऋगवेद काल से गंगा देव नदी कही जाती है। युगों ने करवट बदली, लेकिन यह पवित्र नदी माता ही रही। हम प्यार से इसे गंगा माता कहते हैं।

गंगा का जल संसार में सबसे पवित्र जल है। इसके नित्य सेवन से रोग मिट जाते हैं। लक्ष्मण ने ऋषिकेश में इसके किनारे राज रोग से मुक्ति पायी। विजय नगर के राजा कृष्णराय ने भी इसके जल से रोग पर विजय पाई। धर्मान्ध औरंगजेब अक्सर शीत रोग से पीड़ित रहता था। गंगाजल के सेवन से उसकी बीमारी हमेशा के लिए चली गई। मुहम्मद तुगलक, अकबर, औरंगजेब और टीपू नित्य गंगाजल ही पीते थे।

ब्रिटेन के डाक्टर हैनकिन्स, नेल्सन और कनाडा के हैरिसन ने गंगाजल को रोग शमन करने वाला बताया है। फ्रांस के डा० हूलरे ने इसे हैजे को शान्त करने वाला बताया है, और जब दवा रोग से हार गई तब मैलोरी और तेजबहादुर सप्रू ने पेट के गैस के लिए इसका ही प्रयोग किया।

रस शास्त्र तथा अन्य आयुर्वेदिक शास्त्रों में गंगाजल को मृदु, हृदय को शक्ति देने वाला, आँखों की ज्योति बढ़ाने वाला तथा गैस को शान्त करने वाला कहा गया है।

—प्रद्युमन,
सी०ई० (डी)

भाषा-विवाद

स्वतन्त्रता के बाद भाषा-विवाद अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिया गया। परन्तु प्रधानमन्त्री नेहरू जी की ढाल-ढाल से हिन्दी सिर्फ कागज पर ही लिखी गई; और वह राष्ट्रभाषा सही माने में न हो सकी। गांधी जी ने अंग्रेजी का जोरदार विरोध किया था; उन्होंने कहा था कि जब तक अंग्रेजी हिन्दुस्तान में रहेगी हमारी भाषायें कंगाल ही रहेंगी; और हुआ भी ऐसा ही। एक वर्ग अपने हित को सुरक्षित रखने के लिए अंग्रेजी को हमेशा ही बनाये रखना चाहता है तथा नियति चक्र भी कुछ इसी तरह चल रहा है। दून स्कूल का पढ़ा हुआ हो या अनपढ़ धन पशु हो जिसके पास पैसा है वह अपने पुत्र को अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने को भेजता है। हिन्दी सिसकती हुई चौराहे पर सिर्फ साधनहीन व्यक्तियों के लिए रह गई है।

प्रश्न उठता है कि क्या अंग्रेजी हमारे राष्ट्र के हित में है? धनपशु और मूढ़मति भले ही कुछ तर्क रखें; अंग्रेजी से देश का पतन हुआ तथा हो रहा है। जितना समय हम अंग्रेजी में लगाते हैं, अगर हम उतना ही समय विज्ञान या दूसरे विषयों में लगायें तो उनके हम अच्छे जानकार हो सकते हैं। लेकिन यहाँ तो समय बर्बाद करने के बजाय नष्ट आत्मा ही उपलब्ध होती है। सफेद टोपी भले कुछ दिन के लिए हमें मति-भ्रम करदे; लेकिन सत्य सूर्य घटाओं को चीर कर चमकेगा और समय आ सकता है जब अंग्रेजी गिरमिटियों को लोग चुन-चुनकर मारें।

अतः अंग्रेजी का मोह छोड़कर हमें अपनी भाषाओं की समृद्धि करनी ही पड़ेगी।

—अरविन्द अग्रवाल,
सी०ई० (डा)

सुलताना डाकू

सुलताना डाकू एक बहुत बड़ा डाकू था। डाकू होने पर भी वह गरीबों की सहायता करता था। परन्तु पुलिस उससे थर-थर काँपती थी।

मैंने नजीबाबाद में सुलताना डाकू का किला देखा है। वह बड़ा अद्भुत किला है। इस किले को सुलताना ने अपने साथियों के साथ, अपने हाथों से बनाया था। यह किला एक लम्बी दीवार की तरह है। इस किले में कोई कमरा नहीं दिखता था। वहाँ केवल एक तालाब था। उस दीवार जैसे किले में एक चोर दरवाजा था जिसमें घुसने पर तीन-चार गहरे कुएँ पड़ते थे।

सुलताना डाकू इसी किले की दीवारों में रहता था। उसके घोड़े दूर तक कूद सकते थे। उसके साथी और घोड़े इतने चतुर थे कि उन सब गहरे कुंओं को कूद जाते थे। पुलिस या अन्य कोई भी उस किले में घुसता था तो वह कुएँ में गिर कर मर जाता था।

किले के भीतर जो तालाब है वह बहुत गहरा है। कहते हैं एक बार उसकी गहराई नापने के लिए क्रेन द्वारा पचास डिब्बे वाली रेलगाड़ी उसके भीतर डाली गयी। यह पूरी रेलगाड़ी डूब गयी और उसका कुछ भी पता न चला।

इस किले की दीवार में एक मन्दिर है। उसमें शिवजी की मूर्ति है। यह किला सचमुच देखने योग्य है।

—अतुल बहादुर सिंह,
एल०आर०ए० (६७)

हवाई जहाज से यात्रा

हवाई यात्रा में मुझे बहुत आनन्द आता है। इसमें न रेलगाड़ी की खचड़-पचड़ है और न मोटर की झक-झक है। आप बैठें और जहाज ऊपर उड़ने लगा। कुछ ही देर में वह आसमान के सीने को चीरता हुआ आगे तेजी से उड़ता हुआ निकल जाता है। नीचे जमीन सरकती सी लगती है। नदियाँ, पहाड़, गाँव, नगर सब तेज़ी से दौड़ते हुए लगते हैं। हम बादलों की दुनियाँ में खोये हुए रहते हैं।

अचानक कुछ लीजिये की मधुर ध्वनि से अपने विचार बिखर जाते हैं। नजर पड़ती है एक सुन्दर विमान पारिचायिका पर जो ट्रे य लिए खड़ी होती है। विमान अब धरती की ओर उतरने लगता है। नीचे हवाई अड्डा साफ दिखाई देने लगता है। विमान के रुकते ही सीढ़ी खुल जाती है और एक-एक करके हम नीचे उतर जाते हैं।

सपनों की दुनियाँ में से एक बार फिर धरती पर आ चुके, यही धरती फिर हमें हवाई जहाज पर ले जायगी। यात्रा की मधुर यादें मन में गुदगुदी करती रहेंगी।

—छत्रसाल सिंह,
सी०ई० (बी)

अन्तरात्मा की आवाज

आज मेरे देश में,
मुर्दों के कफन चुराए जाते हैं,
झोंपड़ी जलाई जाती हैं,
महल सजाए जाते हैं,
और समाजवाद के नारे लगाये जाते हैं,

उधर भूख और पीड़ा रोती है,
इधर राग और रंग के,
गीत गाए जाते हैं,
खून चूस कर गरीबों का,
समाजवाद के नारे लगाए जाते हैं।

—महेश (४६)
सी०ई० (डी)

हमारा देश

हमारे देश का नाम भारत है। कई देशों में तो जल ही जल है या पर्वत ही पर्वत या मैदान ही मैदान। मगर हमारे देश में जल भी है, थल भी है और पर्वत भी हैं। इसके अतिरिक्त कुछ देश केवल गर्म हैं, कुछ देश केवल सर्द हैं। कुछ देशों में हरियाली नहीं तो कई में वर्षा ही वर्षा है; किन्तु हमारे देश में यह सब विशेषतायें हैं। इसमें गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि समय-समय पर आती हैं। यह विशेषताएं भारत में हैं। हमारा देश सबसे न्यारा है।

इसके सिर पर हिमालय का मुकुट रखा हुआ है। गंगा और यमुना की पवित्र धाराएं इसके गले का हार हैं। रावण की सोने की लंका इसका पायदान है। बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर इसके चरण धोते हैं। पंजाब इसका हृदय है। काश्मीर इसका मादक स्वर्ग। ऐसा देश कहाँ है?

हमारे देश को इस बात का गौरव है कि उसने कर्ण जैसे दानी, भीम जैसे योद्धा, अर्जुन जैसे धनुषधारी, गुरू नानक और कबीर जैसे सन्त पैदा किए। जितनी महान आत्माएं भारत ने पैदा की हैं उतनी सारा संसार मिलकर भी न कर सकेगा।

देश के हर व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह कभी ऐसा काम न करे जिससे देश का अपमान हो। हमारे देश में शक्ति भी है और भक्ति भी है, चरित्र भी है और अपनी रीति भी है किन्तु आपस में प्रीति नहीं, एकता नहीं, ममता नहीं और समता नहीं। यदि हम यह बातें अपने देश में ला सकें तो निश्चित रूप से हमारा देश अपना पुराना गौरव प्राप्त कर सकेगा। भगवान करे कि हमारा देश दिनों-दिन उन्नति करे और हम सब कहें:—

"हमें प्राणों से अपना देश अत्यन्त प्यारा।
सकल नभ के सितारों में चमकता शुभ्र तारा॥"

—राजीवकुमार (२५६)
पी०सी०ई० (बी)

चुटकुले

अध्यापक—"चीन दूर है या चाँद ?"

एक लड़का—"चीन।"

अध्यापक—"तुम्हें यह कैसे मालूम कि चीन दूर है ?"

एक लड़का—"हम चाँद को रोज रात में देख सकते हैं, लेकिन चीन को नहीं।"

* * *

माता—"बेटा, हनुमान जी के लिए धूप ले आ।"
बेटा—"माँ, अभी सूरज नहीं निकला है, सूरज निकलने पर धूप ले आऊँगा।"

* * *

—इकबाल हुसैन (२५२)
पी०सी०ई० (सी)

माँ—बेटा आज तुम्हें दूध नहीं मिलेगा।
बेटा क्यों माँ ?
माँ—क्योंकि दूध फट गया है।
बेटा—तो सीं दीजिये।

* * *

विमला—माँ मेरे पेट में दर्द हो रहा है।
माँ—बेटी तुम्हारा पेट खाली है, जाकर कुछ खा लो।
शाम को एक औरत आकर कहती है—मेरा सिर दर्द कर रहा है, विमला की माँ।
विमला—चाची आपका सिर जरूर खाली है, जाकर कुछ खा लो।

—अरुण (१३३)

* * *

एक बार एक लड़का धूप में बैठा हुआ था। उधर से उसका मित्र आया और उसने पूछा, "तुम इतनी गर्मी में धूप में क्यों बैठे हो ?" उसने उत्तर दिया, "मैं अपना पसीना सुखा रहा हूं।"

* * *

एक बार एक लड़का परीक्षा देने गया पर वह रो हुए घर लौटा। उसके पिताजी ने पूछा, "कहो, परीक्षा कैसी हुई ?" लड़के ने उत्तर दिया, "परीक्षा-पत्र मे लिखा था, 'पीछे देखो' मैंने पीछे देखा कि मास्टर जी ने मुझे बाहर निकाल दिया।"

* * *

एक बार एक पानी का जहाज पानी में चल रहा था कि एक आदमी जहाज से पानी में गिर गया। सब लोग वहाँ पर इकट्ठे हो हो गए पर डर के मारे कोई उसे न बचाए, पर एक आदमी ने पानी में कूदकर उसे बचा लिया। रात को सबने उससे पूछा, "अरे यार, तुम्हें डर नहीं लगा जब तुम कूदे थे।" उस आदमी ने उत्तर के बजाय प्रश्न पूछा, "पहले बताओ, किसने मुझे पानी में धक्का दिया।"

—दीपक कनवर (१५६)
पी०सी०ई० (सी)

एक तुकबन्दी

क्रिकेट का महीना,
पब्लिक करे शोर,
सोबर्स करे बोलिंग,
पटाऊडी करे स्कोर।

शम गजब ढाये,
ए लाल छोकरिया,
पिच को सम्भालो,
रे लाऊरी भय्या॥

—नकुल,
सी०ई० (डी)

डाक्टर का जीवन

लोग मुझे डाक्टर कहते हैं। मैं रोज सवेरे अपनी दुकान में पहुंच जाता हूं। मेरा काम बीमार और कमजोर लोगों को ठीक करना होता है। यदि ठीक न कर सकूं तो उन्हें आराम पहुंचाने का प्रयत्न अवश्य करता हूं। मैं गरीब लोगों को दवाई मुफ्त भी देता हूं। कभी-कभी मुझे रात में भी मरीजों को देखना पड़ता है।

बैठने का काम अधिक होने के कारण मेरा शरीर कुछ मोटा हो गया है। मैंने इसके लिए दवाइयों का भी प्रयोग किया किन्तु लाभ नहीं हुआ।

अब मैं धन का लालची भी अधिक हो गया हूं, और मरीजों से अधिक पैसा लेता हूं। अब मैं पैसे के लालच में ऐसे मरीज भी ले लेता हूं जिनको मैं अच्छा नहीं कर सकता।

मेरी दुकान में दो कम्पाउन्डर हैं जो दवाई तैयार करते हैं। मैं नुसखे लिखता हूं, कम्पाउन्डर दवाई बनाता है। मैं प्रयोग करने की तरकीब बताकर दवाई की कीमत पचास गुनी वसूल कर लेता हूँ।

परन्तु मेरा जीवन सुखी नहीं है। मुझे हर समय अधिक पैसे बनाने की चिन्ता लगी रहती है।

—राजीव बंसल
पी०सी०ई० (बी)

बोलता बाजार

"आलू ले लो, आलू ले लो" तरकारी बेचने वाले की आवाज सुनाई दे रही थी। दूसरी ओर कोई लौकी बेच रहा था और कोई बैंगन। इतने में ही कई रिक्शा आते हुए दिखाई दिए। "परे हटो, बाबू जी"—चिल्लाते हुए बीच से सरकस के जोकर की तरह रास्ता बनाते हुए निकल गये। दूसरी ओर एक दूकानदार और खरीदार में लड़ाई हो रही थी। पास वाली दूकान में दो पंजाबी औरतें दूकानदार को गाली दे रही थीं।

समय गुजरता गया। इतने में ही पांच लीची की पेटियाँ नीलाम होने के लिए लायी गयीं। एक घण्टे के अन्दर हीं सब की सब बिक गयीं।

एक बार फिर से एक लड़ाई का दृश्य देखने में आया। दो छोटी लड़कियाँ एक दूसरे की चुटिये खींच रही थीं।

कई छोटे बच्चे सड़क के किनारे बैठे हुए भीख माँग रहे थे। चारों ओर शोरगुल हो रहा था।

इतने में ही एक कुत्ता कहीं से रोटी ले आया। जब और कुत्तों ने उसें देखा तो वे उस पर टूट पड़े और रोटी छीन ली।

यह बदलते हुए दृश्य तथा अनोखी आवाज सुनता हुआ मैं वहां से चल पड़ा।

कभी-कभी साते-सोते भी वहां आवाज—"आलू ले लो, आलू ले लो, प्याज ले लो" मेरे कानों में गूंजने लगती।

—प्रदीप भार्गव (१८३)
पी०सी०ई० (ए)

मेरा देश

वही देश है मेरा,

जहाँ बुद्ध ने सत्य अहिंसा का, था अलख जगाया,
गुरूनानक ने विश्व-प्रेम का, राग जहाँ बरसाया,
मेरे-तेरे का, भेदभाव का, मन से मिटा अंधेरा।
वही देश है मेरा॥

जहाँ विवेकानन्द सरीखे,
हुए तत्त्व के ज्ञानी।
रामतीर्थ के अधरों पर भी,
जिसकी अमर कहानी॥
जिसके कण-कण में लेता है,
सूरज नित्य बसेरा—
वही देश है मेरा॥

वेद ऋचाओं से गूंजा है, जिसका अम्बर नीला।
जहाँ राम, घनश्याम कर गए, युग-युग अद्भुत लीला॥
जहाँ बांसुरी बजी ज्ञान की, जागा स्वर्ण-सन्देश।
वही देश है मेरा॥

—दीपक मनसुखानी
सी०ई० (डी)